THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-04 | January-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/

अज्ञेय की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानवीय संवेदनाएँ

डॉ० कृष्ण कुमार पाल

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, का. सु. साकेत पी.जी. कॉलेज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश

सारांश:

अज्ञेय ने अपनी कहानियों के माध्यम भारत विभाजन के दौरान उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक उथल-पुथल को गहराई से प्रस्तुत किया है। अज्ञेय ने शरणदाता, मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई, रमन्ते तत्र देवता, नारगियां और बदला जैसी कहानियों के माध्यम से सांप्रदायिक हिंसा, पहचान का संकट और मानव व्यवहार की जटिलताओं का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानियां मानवीय पीड़ा और सार्वभौमिक संघर्ष का प्रतिबिंध प्रस्तुत करती हैं।

बीज शब्द: विभाजन का दंश, मानवीय संवेदनाएं, सांप्रदायिक हिंसा, नैतिक संघर्ष, शरणार्थी, मानवीय मूल्य।

अज्ञेय लोकप्रिय और प्रतिष्ठित कथाकार के रूप में जाने जाते है जो कि हिन्दी कथा-साहित्य में प्रयोगवादी परम्परा के सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनकी लेखनी जहाँ सामाजिक जीवन की सच्चाइयों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करती है। वहीं चेतना का संस्कार भी प्रदान करती है। उन्होंने अपने कथा-साहित्य में मध्यवर्ग के संस्कारों को बदलने का रचनात्मक प्रयास किया है। उनकी कहानियों में जहाँ मध्यवर्ग की विशेष अभिव्यक्ति है वहीं आधुनिकता का पुट भी मिलता है। परिस्थितियों के अनुसार बदलाव, आधुनिकता बोध तथा यथार्थवादी विचारधारा का संघर्ष भी है। अंतर्विरोध, विसंगति और विडंबना के साथ-साथ व्यंग्य भी है। जो बड़े सहज और सादगी के साथ प्रस्तुत किए गए हैं।

साम्प्रदायिकता के लिए अंग्रेजी में 'कम्युनलिज्म' (Communalism) शब्द प्रचलित है। धार्मिक आधार पर बँटे दो समुदाय के लोग जब एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं, तो वह स्थिति साम्प्रदायिकता कहलाती है। साम्प्रदायिकता विश्व स्तर पर एक गम्भीर समस्या है। जिससे अन्य देशों के साथ-साथ भारत भी पीड़ित है। फिर भी इस समस्या का अब तक कोई हल नहीं निकल सका है। इतिहासकार 'विपिनचन्द्र' के अनुसार 1937 के बाद साम्प्रदायिकता का जो दौर शुरू हुआ वह झूठ, घृणा, और हिंसा पर आधारित था इसलिए इसे फासिस्ट कहा जा सकता है। ये अतिवादी, साम्प्रदायिक लोग थे। इन्होनें कहा कि हिन्दू-मुस्लिम हित एक-दूसरे से अलग ही नहीं बल्कि एक-दूसरे लिए असहनीय भी है । इन्होनें ऐलान कर दिया कि हिन्दू और मुस्लिम समुदायों की भलाई एक-दूसरे को नष्ट कर देने में ही है। यह घृणा, अलगाव और निन्दा के दौर की शुरूआत थी। जिन्ना और मुस्लिम लीग ने यह तर्क दिया कि भारत में दो राष्ट्र हिन्दू और मुस्लिम बसते हैं अतः वे एक ही राष्ट्र में नहीं रह सकते।

प्रख्यात इतिहासकार 'डॉ० विपिनचन्द्र' ने साम्प्रदायिकता के विषय में लिखा है कि- "साम्प्रदायिकता का उदय और विकास ब्रिटिश शासकों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत हुआ था। वे साम्प्रदायिक ताकतों को इसलिए भी बढ़ावा देते थे क्योंकि ये ताकतें राष्ट्रवाद और सामंतवादी विरोधी ताकतों को कमजोर करने में मदद करती थी। हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक दोनों एक की नकल करते थे और 1936 के बाद तो दोनों ने ही उस द्विराष्ट्र सिद्वान्त का प्रतिपादन और प्रचार किया, जिसकी वजह से आखिरकार भारत का विभाजन हुआ।"[1]

प्रसिद्ध इतिहासकार 'राम पुनियानी' के अनुसार- "साम्प्रदायिकता मुसलमान, सामन्तों, हिन्दू जमीदारों की नीतियों तथा अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' की नीति के कारण पैदा हुई। मुस्लिम साम्प्रदायिक राजनीति का नेतृत्व मुस्लिम लीग ने किया। उसने इस्लाम पर आधारित देश की माँग की। हिन्दू साम्प्रदायिक ताकतों ने खुद को हिन्दू राष्ट्र के निर्माण में लगा दिया। दोनों ही समूहों का मानना था कि धर्मराष्ट्र का आधार होना चाहिए। फर्क यह था कि मुस्लिम लीग के अनुसार मुसलमान अलग राष्ट्र है चूँकि वे अंग्रेजों के अलावा और किसी के गुलाम नहीं रहे हैं।"[2]

सन 1947 का विभाजन भारतीयों के लिए बड़ी त्रासदी लेकर आया। जिससे बड़े पैमाने पर पलायन, हिंसा और समाज में दरारें पैदा हो गई। यह विभाजन कौम के आधार पर हुआ था। मुस्लिम बहुसंख्यक क्षेत्र पाकिस्तान बना और हिंदू बहुसंख्यक क्षेत्र भारत बना। लोगों को यह विकल्प दिया गया कि वे अपनी इच्छा के अनुसार भारत या पाकिस्तान में बस सकते हैं. लेकिन विभाजन ने पहले से मौजूद सांप्रदायिक दरारों को और अधिक गहरा कर दिया। इसके परिणामस्वरूप, बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे। दोनों समुदायों के लोग एक-दूसरे के खिलाफ हिंसक हो गए और सालों से साथ रहने वाले लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे बन गए।

कथाकार अज्ञेय इन सांप्रदायिक घटनाओं से विचलित थे। उन्होंने अपनी कहानियों में भारत विभाजन के दौरान उत्पन्न सामाजिक-राजनीतिक और सांप्रदायिक विभाजनों का विश्लेषण किया है। ये कहानियां सांप्रदायिक हिंसा के भयावह दृश्यों के साथ ही उस समय के सामाजिक,राजनीतिक, मनोवैज्ञानिक और नैतिक पक्षों को गहराई से विश्लेषित करती हैं। अज्ञेय की कहानियों में बाह्य हिंसा की घटनाओं की बजाय पात्रों की अंतर्कलह तथा मानवीय संबंधों पर पड़ते उसके प्रभाव पर अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है।

अज्ञेय ने अपनी कहानियों में साम्प्रदायिकता की समस्या को बखूबी उजागर किया है। उनकी कहानियों का मुख्य विषय सांप्रदायिकता का मानवीय मूल्यों पर पड़ने वाला प्रभाव है। साम्प्रदायिक सौहार्द और वैमनस्य दोनों स्थितियाँ उनकी कहानियों में देखने को मिलती है। साम्प्रदायिकता को लेकर लिखी गयी कहानियों में कुछ कहानियाँ विभाजन के समय की त्रासदी को चित्रित करती हैं। उनकी 'शरणदाता' नामक कहानी में इन सन्दर्भों को बखूबी चित्रित किया गया है । कहानी के नायक देविंदर लाल द्वारा अताउल्लाह को शरण न देना इस बात का संकेत है कि साम्प्रदायिक घृणा किस प्रकार मानवीय संवेदना पर हावी हो जाती है। विभाजन के दौरान एक ही समाज में दो प्रवृतियां देखने को मिलती हैं । एक ओर धर्मान्धता से ओतप्रोत अताउल्लाह हैं जो शरणागत की हत्या करने पर तूले हैं वहीं दूसरी ओर उनकी ही बेटी जैबुन्निसा है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी मानवता और करुणा नहीं छोड़ती है। कहानी के अंत में देवीन्दरलाल को जैबुन्निसा की चिट्ठी मिलती है- "आप के मुल्क में अकलियत का कोई मजलूम हो तो याद कर लीजिएगा इसलिए नहीं कि यह मुसलमान है, इसलिए कि आप इंसान है।"[3] लेकिन देवीन्दरलाल द्वारा जैबुन्निसा की चिट्ठी को फेंकना इस बात का परिचायक है कि उनका हृदय अब उन मानवीय संवेदनाओं से वंचित हो चुका है वे अब अपने ही दुःख, दर्द और विभाजन

के आघात से मानवीय संबंधों के महत्व को नहीं समझ पा रहे हैं। सांप्रदायिक हिंसा ने न केवल समाज को बाँट दिया, बल्कि लोगों के आपसी रिश्तों और मानवीय संबंधों में भी दरार डालकर मानवता को क्रूरता में बदल दिया है।

इसी प्रकार अज्ञेय की 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' शरणार्थी समस्या पर आधारित एक वैचारिक कहानी है। इसमें भावुकता से पिंड छुड़ाकर यथार्थ को सही मायने में आंका गया है। यह कहानी सांप्रदायिक उन्माद की गहराती विषाक्त-चेतना का यथार्थ चित्रण करने के साथ-साथ विभाजन की कोख से फूट पड़ी दारुण एवं जटिल स्थितियां तथा छार-छार होते हुए मानवीय संबंधों एवं नैतिक मूल्यों विश्वासों की करुण कथा प्रस्तुत करती है। यह विभाजन मुस्लिम समाज के ही अभिजात्य वर्ग और हाशिए पर रहने वाले लोगों के बीच का है। लेखक ने अमिना, जमिला और सकीना नामक पात्रों के माध्यम से यह दिखाया हैं। सांप्रदायिक दंगों के दौरान छोटी-छोटी बातें, अफवाहें और असत्य सूचनाएँ समाज में आग से भी तेज फैलती हैं, जिससे घृणा और हिंसा की लहरें उठती है। उदाहरण स्वरूप अखबार में छपी एक खबर ने सरदारपुरा गाँव को भयभीत कर दिया। "अफ़वाह है कि जाटों के कुछ गिरोह इधर-उधर छापे मारने की तैयारियाँ कर रहे हैं। इन तनिक-से आधार को लेकर न जाने कहाँ से खबर उड़ी कि जाटों का एक बड़ा गिरोह हथियारों से लैस, बन्दूकों के गाजे-बाजे के साथ खुले हाथों मौत के नये खेल की पर्चियाँ लुटाता हुआ सरदारपुरे पर चढ़ा आ रहा है।"[4]

कहानी में धर्म बनाम वर्ग का भी मुद्दा उठाया गया है। जिससे यह स्पष्ट होता है कि एक ही धार्मिक समुदाय की होने बावजूद आर्थिक स्थिति वर्गीय प्रस्थिति के निर्धारण की आधार बनती है। अमीना और उसकी सहेलियों को मुस्लिम होने के बावजूद तथाकथित उच्च वर्ग की महिलाओं ने गाड़ी में बैठने से रोका ही नही बल्कि उनका चरित्र हनन भी किया। "बड़ी पाक़दामन बनती हो! अरे, हिन्दुओं के बीच में रहीं, और अब उनके बीच भागकर जा रही हो, आखिर कैसे? उन्होंने क्या यों ही छोड़ दिया होगा? सौ-सौ हिन्दुओं से ऐसी-तैसी कराके पल्ला झाड़ के चली आयी पाक़दामानी का दम भरने..."[5]

जब समाज में मानवता के स्थान पर धार्मिक संकीर्णता का वर्चस्व होता है, तब सांप्रदायिक हिंसा, घृणा और अविश्वास का जन्म होता हैं। लेखक ने इस कहानी के जरिये विभाजन से उत्पन्न समस्याओं, टूटते विश्वासों और ध्वस्त होते नैतिक मूल्यों को उजागर किया है। यह कहानी पाठकों को गहराई से विचार करने पर विवश करती है कि सामाजिक समरसता के लिए धार्मिक उन्माद से ऊपर उठकर मानवीय संवेदना के साथ समानता के पथ पर अग्रसर होने की आवश्यकता है।

अज्ञेय की 'रमन्ते तत्र देवता' नामक कहानी सांप्रदायिक दंगों की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। जिसमें देवत्व और पवित्रता जैसे सामाजिक मूल्यों पर व्यंग्य किया गया है। जहाँ समाज द्वारा स्थापित आदर्श और यथार्थ आपस में टकराते हुए दिखाई देते हैं। इस कहानी के माध्यम से समाज में स्त्रियों की स्थिति और उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण का गहन विश्लेषण किया गया है।इस कहानी में स्त्री-पुरुष संबंधों में असमानता तथा स्त्री अधिकारों का हनन और समाज द्वारा जबरन थोपे गए नैतिक मूल्यों पर भी प्रश्न उठाए गए हैं। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता' सूक्ति के माध्यम से कहानीकार ने हिन्दू समाज में स्त्रियों की स्थिति को बयाँ किया है। यह उक्ति जिस हिन्दू समाज में गूँजती है उसी समाज में स्त्रियों का जीवन कितना अमानवीय हो सकता है। इसका चित्रण कहानीकार ने बड़े ही प्रभावी ढंग से किया है। जहाँ सांप्रदायिकता की विभीषिका के बीच एक स्त्री की असहाय स्थिति को दिखाया गया है। सरदार बिशन सिंह जैसे पात्रों के माध्यम से कहानी में मानवता, सहानुभूति और स्त्री के प्रति समाज के

अमानवीय रवैये को उजागर किया गया है। दंगे के समय जब एक स्त्री गुरुद्वारे में शरण लेती है, तो सरदार बिशन सिंह उसे सुरक्षित उसके पति के पास छोड़ने जाते हैं। लेकिन उसका पति उसे सहर्ष स्वीकार करने के बजाय उसे शंकालु नजर से देखता है और घृणा से भरकर उसे धक्का मारकर बाहर कर देता है। "तुम रात को क्या जाने कहा रही हो, सबेरे तुम्हें यहाँ आते शरम न आई।"[6] यह घटना भारतीय समाज में स्त्रियों के प्रति व्याप्त संदेह और उनके साथ होने वाले अमानवीय व्यवहार का प्रतीक है। यहाँ स्त्रियों का मान-सम्मान,स्वाभिमान और मर्यादा सब कुछ समाज की संकुचित सोच की भेंट चढ़ जाता है।

यह कहानी हिन्दू समाज की उस विडंबना को व्यक्त करती है। जहाँ कहने के लिए तो स्त्री साक्षात् देवी स्वरूप पूजनीय है। फिर भी समाज ने उसके लिए दोहरे मापदंड तय किये हैं। यहाँ पति अपनी पत्नी के प्रति संदेह से भरा दिखाई देता है, जबकि सरदार बिशन सिंह जैसे लोग मानवीयता और सच्चाई के प्रतीक के रूप में सामने आते हैं। सरदार बिशन सिंह का व्यंग्यात्मक वक्तव्य जो हिन्दू समाज के खोखले आदर्शों पर सीधा प्रहार करता है। "वह मर जाएगीय छुटकारा हो जाएगा। हिन्दू धर्म उदार है न, मारता नहीं, मरने का सब तरह से सुभीता कर देता है।"[7]

यह कहानी न केवल सांप्रदायिक हिंसा की शिकार स्त्रियों की बेबस स्थिति को उजागर करती है, बल्कि समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक सोच और स्त्रियों पर उसके पड़ने वाले दुष्प्रभाव को भी दर्शाती है।बदला कहानी, बदला लेने की दृष्टि से नहीं लिखी गई 'बदला' कहानी, बदला लेने की दृष्टि से नहीं लिखी गई है। बल्कि इसमें 'बदला' एक नये ढंग का 'बदला' है। यह कहानी विनाश के बीच नैतिक मुक्ति की संभावना पर जोर देती है तथा विभाजन के दौरान उत्पन्न समस्याओं, विशेषकर बिछुड़े हुए परिवारों और उनकी पीड़ादायक स्थिति को दर्शाती है। इसमें ट्रेन में बैठें एक सिख की कहानी कही गई है जो लाहौर से भारत आया है- उसकी विडम्बना है कि उसको अपने देश में शरणार्थी कहा जाता है। 'सिख' को यह पता है कि उसके और उसके परिवार के साथ किस प्रकार के अत्याचार हुए हैं लेकिन भारत में वह ट्रेन को ही अपना घर समझता है। वह दंगे में फंसे मजलूम लोगों की सहायता करता है। ट्रेन में बैठी सुरैया की वह मदद करता है। उसका कहना है- "शेखपुरे में हमारे साथ जो हुआ सो हुआ मगर मैं जानता हूँ कि उसका मैं बदला कभी नहीं ले सकता, क्योंकि उसका बदला हो ही नहीं सकता। मैं बदला ले सकता हूँ- और वह यही कि मेरे साथ जो हुआ है, वह और किसी के साथ न हो। इसीलिए दिल्ली और अलीगढ़ के बीच इधर और उधर लोगों पहुँचाता हूँ।"[8]

'लेटर बॉक्स' नामक कहानी में शेखपुरे के एक युवा शरणार्थी रोशन की व्यथा वर्णित है। जो दंगे के कारण अपने पिता से बिछुड़कर शरणार्थी शिविर में रहता है। यह बालक उस अकेलेपन के दर्द का प्रतीक है, जिसे विभाजन के समय अनगिनत लोगों ने भुगता । रोशन का लेटर बॉक्स में चिट्ठी डालने का अरमान उस उम्मीद और विश्वास का प्रतीक है जो बिछडे हुए लोग अपने परिजनों से पुनर्मिलन की आशा में रखते थे। कहानी में लेखक ने रोशन से पता पूछा कि- "पता भी तो लिखना होगा, पगले! क्या पता है? सो तो बाबूजी बताएंगे, मुझे क्या मालूम।"[9]

शरणार्थी जीवन पर आधारित 'नारंगिया' एक महत्वपूर्ण कहानी है। इसमें दो शरणार्थी भाइयों हरसू और परसू की कहानी कही गई है। जब 'हरसू' नारंगियों की दुकान सजाकर नारंगिया बेचता है तब शरणार्थी हृदय की सही पहचान होती है। वे हैं तो शरणार्थी लेकिन उनका हृदय परोपकार एवं सहानुभूति से लबालब भरा हुआ है। बच्चों को नारंगियों की तरफ हसरत भरी निगाहों से देखते हुए परसू, हरसू से कहता है-"अबे, दे दे न नारंगी- उन्हें ऐसे देखते देख तुझे तरस नहीं आता शरम नहीं आती? तू इन्सान का बेटा है।"[10] इतना ही नहीं परसू अपने पास से अठन्नी निकालकर हरसू को देता है और बच्चों को नारंगिया देने के लिए कहता है। हरसू के दो आने वापस करने पर परसू कहता है- "मेरे दो आने। हुँह!

मेरे दो आने। मेरे बाप के हैं। जा ये भी उस छोकरे को दे दे जो अपने पैसे से नारंगी खरीदता है, कह दे उसे, जाकर यह भी अपने बाप को दे दे।"[11]

यह कहानी मानवीयता, उदारता और यथार्थ को बड़े ही सहज ढंग से प्रस्तुत करती है।

निष्कर्ष-

अज्ञेय की कहानियाँ विभाजन के समय की सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ से परे जाकर संकट के समय में मानवीय मूल्यों पर आधारित एक सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्र मानवीय मूल्यों की नाजुकता को ध्यान में रखते हुए मानवता का सन्देश देते हैं।

सन्दर्भ:

1. वर्मा,डॉ.लखवीर कौर (2013): देश विभाजन और नारी की त्रासदी, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ.स.-24

2. वही

3. अज्ञेय, (2002): 'अज्ञेय संपूर्ण कहानियाँ', राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, पृ.स.-489

4. वही, पृ.स.-493

5. वही, पृ.स.-495

6. वही, पृ.स.-499

7. वही, पृ.स.-579

8. वही, पृ.स.-478

9. वही

10.वही, पृ.स.-578

11.वही

Cite this Article:

डॉ० कृष्ण कुमार पाल,"अज्ञेय की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानवीय संवेदनाएँ" The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.134–138

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ० कृष्ण कुमार पाल

For publication of Research Paper title

अज्ञेय की कहानियों में साम्प्रदायिकता और मानवीय संवेदनाएँ

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-04, Month January, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/